टिप्पणियाँ

318hi19

19

आपूर्ति

मांग का अभिप्राय, मांग के निर्धारक घटक और मांग के नियम आदि का हम इससे पूर्व अध्ययन कर चुके हैं। वस्तु की मांग हमेशा वस्तु के क्रेताओं द्वारा होती है, लेकिन क्रेता वस्तु को तभी खरीदता है, जब वह बाजार में उपलब्ध होती है। एक फर्म उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं को उत्पादित करती हैं, जिन्हें गृहस्थ अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए मांग करते हैं। वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए आपेक्षित आगतों की खरीद पर फर्म कुछ-न-कुछ व्यय करती हैं। उन वस्तु और सेवाओं के विक्रय से आगम (Revenue) प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में फर्मों का उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है। यह अध्याय इस तथ्य को समझने पर केंद्रित है कि कोई फर्म या विक्रता अपने उत्पाद को बाजार में विक्रय के लिए तत्पर क्यों होता है? हमारी मान्यतानुसार बाजार में कोई मध्यस्थ नहीं है। अत: फर्म ही अपनी वस्तु का विक्रय करती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- आपूर्ति की परिभाषा दे पाएंगे;
- आपूर्ति को प्रभावित करने वाले घटकों की विवेचना कर पाएंगे;
- आपूर्ति फलन का अभिप्राय जान सकेंगे;
- आपूर्ति फलन से आपूर्ति अनुसूची तैयार कर पाएंगे;
- आपूर्ति नियम की व्याख्या और स्पष्टीकरण कर पाएंगे;
- बाजार आपूर्ति और व्यक्तिगत आपूर्ति में अंतर कर पाएंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची और बाजार आपूर्ति अनुसूची तैयार कर पाएंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति और बाजार आपूर्ति वक्र को बना सकेंगे;
- आपूर्ति और आपूर्ति की मात्रा के परिवर्तन की भिन्नता को समझ सकेंगे; तथा
- आपूर्ति वक्र और संचलन और आपूर्ति वक्र खिसकाव में अंतर कर पाएंगे।

19.1 आपूर्ति का अभिप्राय

किसी फर्म या विक्रेता द्वारा वस्तु की आपूर्ति को इन शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है–वस्तु की वह मात्रा, जिसे एक फर्म या विक्रेता वस्तु की विभिन्न संभव कीमतों पर एक निश्चित समय पर बेचने के लिए प्रस्तुत करता है, लेकिन वस्तु की वास्तविक बिक्री उसकी आपूर्ति से भिन्न हो सकती है। जैसे–एक कृषक (गेहूं का उत्पादक) 15 रु. प्रति किलो पर 50 क्विंटल गेहूं बेचने को तत्पर है, लेकिन इस कीमत पर वह 30 क्विंटल गेहूं ही बेच पाता है, किंतु ये दोनों अवधारणा एक-दूसरे को भ्रमित नहीं करती। आपूर्ति की मांग तीन तथ्यों पर आधारित है। अतः आपूर्ति की परिभाषा में शामिल है–

1. वस्तु की मात्रा, जिसे फर्म बेचने हेतु प्रस्तुत करती है।

2. कीमत, जिस पर बेचने के लिए वह तत्पर है,

3. समय की वह निश्चित अवधि, जिसमें वह वस्तु की मात्रा प्रस्तुत करता है।

अतः आपूर्ति की गई मात्रा से अभिप्राय एक विशिष्ट कीमतों पर बिक्री के लिए प्रस्तुत वस्तु की एक विशिष्ट मात्रा से है।

19.2 आपूर्ति निर्धारक घटक

वस्तु की आपूर्ति का मुख्य निर्धारक तत्व वस्तु की कीमत है, किंतु किसी फर्म के उत्पादन पर अधिकतम लाभ निर्धारित करने में प्रमुख महत्वपूर्ण घटक उस वस्तु की उत्पादक लागत है। उत्पादक लागत उत्पादन की विभिन्न आगतों की कीमत पर निर्भर करती है। जैसे–कच्चा माल, मजदूरों का पारिश्रमिक, पूंजी का ब्याज, इमारत का किराया आदि। वस्तु की आपूर्ति, उत्पादन में प्रयोग की गई तकनीक और अन्य कारकों पर भी निर्भर करती है। आपूर्ति के निर्धारक घटक इस प्रकार हैं–

1. वस्तु की कीमत

2. अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत

3. आगतों/प्रयोग साधनों की कीमत

4. सरकारी कर नीति

5. फर्म के उद्देश्य

1. वस्तु की कीमत

किसी वस्तु की आपूर्ति तथा वस्तु की कीमत में प्रत्यक्ष संबंध है। सामान्यतः किसी वस्तु की कीमत बढ़ने से वस्तु की आपूर्ति बढ़ती है तथा कीमत कम होने से आपूर्ति कम होती है। अधिकतम मात्रा उच्चतम कीमत पर आपूरित होती है, निम्न कीमत पर न्यूनतम। उदाहरण देखिए–कोई टमाटर विक्रेता 40 रु. प्रति किलो दर पर 100 किलो टमाटर बेचने को तैयार है, किंतु वह

टिप्पणियाँ

20 रु. प्रति किलो दर पर 50 किलो ही बेच पाता है। कीमत और आपूर्ति की मात्रा के इस प्रत्यक्ष संबंध के कारण आपूर्ति वक्र की आकृति सकारात्मक ढाल की होती है। आपूर्ति वक्र ऊपर से दायीं तरफ होता है।

2. अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत

किसी वस्तु की आपूर्ति संबंधित वस्तुओं की कीमत पर भी निर्भर करती है। दिए गए साधनों की सहायता से एक ही तकनीकी ज्ञान से हम कई वस्तुएं उत्पादित करते हैं। इसकी सहायता से फर्म मांग के उतार–चढ़ाव तथा उत्पादन की विभिन्नता को नियंत्रण करती है। उदाहरण, एक कृषक इन संसाधनों का प्रयोग करके या तो दालों का उत्पादन करता है या खाद्यान्न का। यदि दालों की कीमत में वृद्धि होती है तो यह उसके लिए लाभकारी होगा कि वह दालों का उत्पादन अधिक करे। अत: वह कुछ संसाधनों को खाद्यान्न उत्पादन से हटाकर दालों उत्पादन में लगा देगा। दालों का उत्पादन बढ़ेगा और खाद्यान्न का घटेगा। यदि दलहन की कीमत में वृद्धि होती है तो दालों की आपूर्ति बढ़ जाएगी, खाद्यान्न की आपूर्ति घटेगी। मूल्य वृद्धि पर खाद्यान्न की आपूर्ति भी बढ़ जाएगी।

3. आयतों/साधनों की कीमत

आगतों जैसे कच्चा माल, मजदूरी, ब्याज आदि की कीमत भी वस्तु की कीमत को प्रभावित करती है। उदाहरण, कपड़े के उत्पादन में कपास मुख्य कच्चे माल की आगत है। यदि कपास का मूल्य बढ़ता है तो कपड़े का उत्पादन मूल्य निश्चित रूप से बढ़ जाएगा। सामान्य कीमत पर लाभ का सीमांत कम हो जाएगा। अत: कपड़ा उत्पादक सामान्य कीमत पर कपड़े की आपूर्ति कम कर देगा। दूसरी तरफ यदि कपास की कीमत गिरती है तो प्रति इकाई कपड़े की लागत भी गिर जाएगी और कपड़े की आपूर्ति बढ़ जाएगी। अन्य आगतों की कीमत भी आपूर्ति पर प्रभाव डालती है।

4. उत्पादन की तकनीक

उत्पादन की तकनीक से उत्पादन में जो सुधार होता है, उससे वस्तु की प्रति इकाई लागत कम होती है। उसी कीमत पर सीमांत लाभ भी बढ़ता है। अत: वस्तु की आपूर्ति अधिक होगी और उत्पादन तकनीक में सुधार आएगा। दूसरी तरफ फर्म उत्पादन में संपूर्ण तकनीक का प्रयोग करके प्रति इकाई उत्पादन लागत बढ़ाकर सीमांत लाभ को घटा देगा। अत: सामान्य कीमत पर फर्म आपूर्ति को घटा देगा। अत: यही मुख्य कारण है कि फर्म उत्पादन में उच्चतम तकनीक का प्रयोग करती है, क्योंकि वे प्रति इकाई उत्पादन लागत को नहीं घटा सकते, लेकिन उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार अवश्य कर सकते हैं।

5. सरकारी कर निर्धारण नीति

यदि सरकार किसी वस्तु के उत्पादन पर लगे उत्पाद कर को कम करती है तो वस्तु की उत्पादन लागत प्रति इकाई कम हो जाएगी और कीमत पर विक्रय पर सीमांत लाभ की सीमा बढ़ जाएगी। इसलिए उत्पादक वस्तु की आपूर्ति बढ़ा देगा। यह तब होता है, जब सरकार उत्पादन बढ़ाना

चाहती है। दूसरी तरफ जब सरकार किसी वस्तु का उत्पादन कम करना चाहती है अर्थात् हानिकारक वस्तुओं, जैसे–सिगरेट या शराब का उत्पादन कम करना चाहती है तो उन पर उत्पादन कर की दर बढ़ा देती है। इस तरीके से वस्तु की प्रति इकाई लागत बढ़ जाने से वस्तु विशेष की आपूर्ति कम हो जाती है।

6. फर्म के उद्देश्य

उत्पादक का उद्देश्य भी वस्तु की आपूर्ति को प्रभावित करता है। यदि फर्म का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है तो केवल अधिक कीमत पर ही वस्तु की अधिक आपूर्ति की जाएगी। इसके विपरीत यदि फर्म का उद्देश्य बिक्री (उत्पादन) का अधिकतम करना है तो प्रचलित कीमत पर भी अधिक आपूर्ति करेगी। इसमें फर्म का ध्येय केवल बाजार में अपनी पकड़ मजबूत कर बिक्री बढ़ाना होता है। इससे उसका लाभ विपरीत अवस्था में प्रभावित नहीं होता। प्रचलित कीमत पर किसी हद तक आपूर्ति बढ़ाकर अपने लाभ को पूरा कर लेता है।

पाठगत प्रश्न 19.1

1. आपूर्ति की परिभाषा दीजिए।
2. आपूर्ति का अभिप्राय क्या है?
3. आपूर्ति निर्धारक के तीन तत्व बताइए।
4. तकनीकी ज्ञान का विकास किस प्रकार आपूर्ति को प्रभावित करता है?
5. वस्तु की आपूर्ति पर आगतों की कीमत का परिवर्तन क्या प्रभाव डालता है?
6. वस्तु की आपूर्ति पर संबंधित वस्तुओं का कीमत-परिवर्तन किस प्रकार प्रभाव डालता है।

19.3 आपूर्ति फलन

आपूर्ति फलन किसी वस्तु की आपूर्ति तथा उसके निर्धारक तत्वों के संबंध को प्रकट करता है। गणितीय सूत्र द्वारा आपूर्ति फलन की व्याख्या निम्न समीकरण द्वारा प्रकट की जाती है–

$$S_n = f(S_n\ P_n\ P_r\ P_f\ T\ T_r\ G)$$

यथा S_n = वस्तु की आपूर्ति n

P_n = वस्तु की कीमत n

P_r = अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत

P_F = आगत/साधनों की कीमत

T = उत्पादन की तकनीक

T_r = सरकार की नीति या कर की दर

G = उत्पादक का उद्देश्य

अत: आपूर्ति फलन बताता है कि आपूर्ति निर्धारक अन्य तत्वों के अपरिवर्तनीय रहने पर वस्तु की आपूर्ति मात्रा और कीमत के संबंध को प्रकट करता है। अत: वस्तु की आपूर्ति कई तत्वों का फलन है। यह बताता है कि विभिन्न कीमत स्तरों पर वस्तु की कितनी मात्रा की आपूर्ति की गई है–

उदाहरण स्वरूप प्रति फलन को कहा जा सकता है–

$$q_s = -15+3P$$

उपरोक्त समीकरण में आपूर्ति की मात्रा Qs कीमत P का फलन है। हमेशा P के पहले धनात्मक (Positive) चिह्न लगाया जाता है। कीमत और मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध के कारण आपूर्ति वक्र का ढलान दायीं तरफ ऊपर की ओर होता है। यहां +3 का मलब प्रत्येक इकाई पर कीमत वृद्धि पर आपूर्ति की मात्रा 3 इकाई तक बढ़ती है और −15 यह प्रकट करता है अक्ष X पर किस बिंदु तक आपूर्ति होती है।

आपूर्ति फलन की सहायता से आपूर्ति अनुसूची को निकाला जा सकता है।

सारणी 19.1 वस्तु X की आपूर्ति अनुसूची

इकाई की कीमत (रुपये में)	प्रत्येक समय की गई आपूर्ति की मात्रा (इकाइयों में)
5	0
6	3
7	6
8	9
9	12

सारणी से विदित होता है कि कीमत का स्तर 5 रुपये से अधिक रहने पर आपूर्ति की मात्रा धनात्मक रहती है, किंतु वस्तु X की आपूर्ति 5 रु. या 5 रु.से कम पर शून्य रहती है, क्योंकि आपूर्ति ऋणात्मक नहीं है।

पाठगत प्रश्न 19.2

नीचे दिए गए आपूर्ति फलन के आधार पर निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

$$(q^s = -12+4P)$$

1. किस कीमत पर आपूर्ति की मात्रा शून्य होती है?
2. यदि आपूर्ति की मात्रा 20 इकाई है तो वस्तु की क्या कीमत होगी?
3. यदि वस्तु की कीमत 10 रु. किलो है तो आपूर्ति की गई वस्तु की मात्रा क्या होगी?

19.4 आपूर्ति का नियम

आपूर्ति का नियम, अन्य निर्धारक अपरिवर्तनीय रहने पर वस्तु की आपूर्ति मात्रा तथा उसकी कीमत के संबंध पर प्रकाश डालता है। नियम बताता है–कीमत तथा आपूर्ति की गई मात्रा के बीच धनात्मक संबंध है। 'अन्य बातें समान रहने पर' किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी आपूर्ति में सकारात्मक संबंध होता है। अर्थात् जितनी कीमत अधिक होती है, उतनी ही आपूर्ति अधिक होती है या जितनी कीमत कम होती है, उतनी ही आपूर्ति कम होती है।

19.4.1 आपूर्ति के नियम की मान्यताएं

आपूर्ति के नियम में यह कथन, 'अन्य निर्धारक तथ्यों का सतत रहना' आपूर्ति के नियम की मान्यताओं की ओर इशारा करता है। वस्तु की आपूर्ति को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकों में शामिल है–वस्तु की कीमत अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, आगतों की कीमत उत्पादन की तकनीक, सरकार की कर निर्धारण नीति और फर्म का उद्देश्य प्रमुख हैं। आपूर्ति नियम की मान्यताएं इस बात पर आधारित हैं कि उपरोक्त सभी कारक आपूर्ति को प्रभावित करते हैं, वस्तु की कीमत के अलावा प्रभावी होते हैं। आपूर्ति नियम की प्रमुख मान्यताएं अधोलिखित हैं–

1. अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
2. आगतों/साधनों की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
3. उत्पादन की तकनीक नहीं बदलनी चाहिए।
4. सरकार की कर नीति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
5. फर्म के उद्देश्य नहीं बदलने चाहिए।

आपूर्ति के नियम की मान्यताएं इस बात पर आधारित करती है कि वस्तु की मात्रा में परिवर्तन वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण ही होता है। अन्य कारक अपरिवर्तनीय रहते हैं।

19.4.2 व्यक्तिगत और बाजार आपूर्ति

व्यक्तिगत आपूर्ति

व्यक्तिगत आपूर्ति का अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है, जिसे एक व्यक्तिगत फर्म एक निश्चित समय अवधि के मध्य एक निश्चित कीमत पर बेचने को तत्पर हैं। यह केवल किसी वस्तु की एक फर्म द्वारा बाजार में की गई आपूर्ति से ही संबंध रखती है।

बाजार आपूर्ति

बाजार आपूर्ति का अभिप्राय बाजार में किसी वस्तु की आपूर्ति करने वाली उन सभी फर्मों की सामूहिक आपूर्ति से है, जो निश्चित अवधि में निश्चित कीमत पर वस्तु की निश्चित मात्रा का

विक्रय करती हैं। बाजार आपूर्ति बाजार में वस्तु की कुल मात्रा का जोड़ है। अत: बाजार आपूर्ति बाजार की सभी व्यक्तिगत फर्मों की आपूर्ति का जोड़ होता है।

19.4.3 आपूर्ति अनुसूची

आपूर्ति अनुसूची वह तालिका है, जो किसी वस्तु की विभिन्न संभव कीमतों पर बिक्री के लिए प्रस्तुत की जाने वाली उस वस्तु की विभिन्न मात्राओं को प्रकट करती है, जिन्हें निश्चित अवधि में बेचता है। आपूर्ति अनुसूची दो प्रकार की होती हैं–

1. व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची

व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची बाजार में किसी एक फर्म की आपूर्ति अनुसूची होती है। व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची एक फर्म द्वारा विभिन्न कीमतों पर एक निश्चित अवधि में की जाने वाली आपूर्ति की मात्रा को प्रकट करती है।

2. बाजार आपूर्ति अनुसूची

बाजार आपूर्ति अनुसूची से अभिप्राय बाजार में किसी वस्तु विशेष का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों की आपूर्ति के जोड़ से है, जो विभिन्न कीमतों पर निश्चित समय अवधि में मात्रा प्रस्तुत करते हैं। बाजार आपूर्ति अनुसूची वह तालिका है, जो सभी फर्मों की विभिन्न कीमतों पर निश्चित समय में कुल मात्रा को दर्शाती है। इस तथ्य को नीचे दी गई तालिका की सहायता से समझाया जा सकता है–

चीनी की बाजार आपूर्ति तालिका

कीमत (प्रति किलो)	फर्म 'अ' द्वारा चीनी की आपूर्ति मात्रा (किलो में)	फर्म 'ब' द्वारा चीनी की आपूर्ति मात्रा (किलो में)	फर्म 'स' द्वारा चीनी की आपूर्ति मात्रा (किलो में)	बाजार में चीनी की आपूर्ति अ+ब+स (किलो में)
25	100	200	0	300
30	200	300	100	600
35	300	400	200	900
40	400	500	300	1200
45	500	600	400	1500

उपरोक्त तालिका में हम देखते हैं कि 25 रु. प्रति किलो कीमत पर तीनों फर्म अ, ब तथा स क्रमश: 100, 200 और 0 किलो चीनी बेचने को तत्पर हैं। इस तरह 25 रु. पर बाजार में चीनी की मात्रा 100+200+0 = 300 किलो है। इसी प्रकार अन्य कीमतों पर चीनी आपूर्ति की कुल मात्रा को ज्ञात किया जा सकता है। बाजार में फर्मों की संख्या बाजार आपूर्ति को प्रभावित करती है।

19.4.4 आपूर्ति वक्र

आपूर्ति वक्र आपूर्ति अनुसूची का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण है, जो वस्तु की मात्रा तथा कीमत के बीच घनात्मक संबंध को प्रगट करता है। यह दर्शाता है कि वस्तु की मात्रा की निश्चित समय व कीमत पर सभी फर्मे, विक्रय करने को तत्पर हैं। जबकि अन्य घटक सतत अपरिवर्तनीय रहते हैं। आपूर्ति वक्र भी दो प्रकार का होता है–

1. व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र

व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र बाजार में एक फर्म की आपूर्ति अनुसूची का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्तिगत फर्म निश्चित अवधि में वस्तु की विभिन्न मात्रों को विभिन्न कीमतों पर विक्रय को तत्पर है।

2. बाजार आपूर्ति वक्र

बाजार आपूर्ति वक्र बाजार में किसी विशेष वस्तु का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों की आपूर्ति अनुसूची का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण है। सभी फर्मों की आपूर्ति वक्रों के समस्तर (Horizontal) जोड़ द्वारा बाजार आपूर्ति वक्र ज्ञात किया जाता है।

यह दर्शाता है कि वस्तु की विभिन्न मात्राओं को विभिन्न कीमतों पर एक समय अवधि में सभी फर्मे विक्रय के लिए तैयार हैं।

मान लीजिए कि बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली केवल तीन फर्म हैं। इन फर्मों की आपूर्ति वक्र क्रमशः SA, SB तथा SC के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। 30 रु. प्रति किलो की दर पर वे क्रमशः 200 किलो, 300 किलो और 100 किलो चीनी विक्रय करती हैं। 30 रु. किलो पर तीनों फर्मों की कुल बाजार आपूर्ति 200+300+100 = 600 किलो हुई। बाजार आपूर्ति का वक्र नीचे दिखाया गया है–

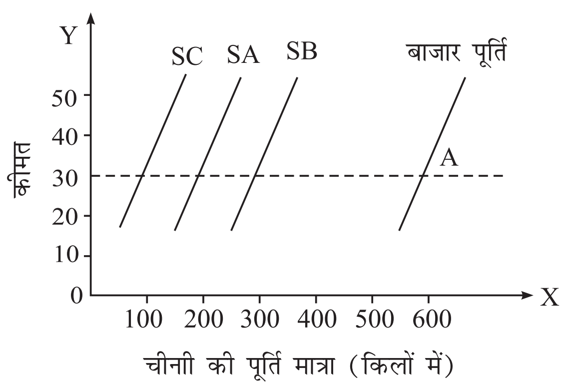

रेखाचित्र 19.1

पाठगत प्रश्न 19.3

1. आपूर्ति नियम की व्याख्या कीजिए।
2. बाजार आपूर्ति की परिभाषा दीजिए।
3. आपूर्ति अनुसूची क्या है?
4. बाजार आपूर्ति अनुसूची व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची से कैसे भिन्न है?
5. आपूर्ति वक्र क्या है?
6. बाजार आपूर्ति वक्र व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र से कैसे उत्पन्न होता है?
7. आपूर्ति नियम की, अनुसूची तथा रेखाचित्र की सहायता लेते हुए व्याख्या कीजिए।

19.5 आपूर्ति निर्धारण के घटक

वस्तु की आपूर्ति निर्धारक सभी कारकों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. वस्तु की कीमत
2. आपूर्ति निर्धारक अन्य तत्व।

यह वर्गीकरण इस तथ्य पर आधारित है कि आपूर्ति का नियम अथवा आपूर्ति वक्र वस्तु की आपूर्ति की मात्रा तथा कीमत में संबंध तभी होता है, जब अन्य निर्धारक तत्व स्थिर रहते हैं।

(i) वस्तु की कीमत

आपूर्ति नियम के अंतर्गत हमने अध्ययन किया है कि कीमत में वृद्धि के साथ आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि होती है। इसी प्रकार अन्य बातें पूर्ववत रहने पर कीमत में आई कमी से आपूर्ति में भी कमी हो जाती है। कीमत में वृद्धि के फलस्वरूप आपूर्ति की गई मात्रा में वृद्धि–आपूर्ति का विस्तार तथा कीमत की कमी से की गई मात्रा में कमी आपूर्ति का संकुचन कहा जाता है। आपूर्ति का विस्तार समान आपूर्ति वक्र पर ऊपर की ओर संचलन करता है, जबकि आपूर्ति संकुचन उसी आपूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचलन करता है।

निम्न रेखाचित्र की सहायता से आपूर्ति के इस विस्तार तथा संकुचन-संचलन को उल्लेखित किया जा सकता है–

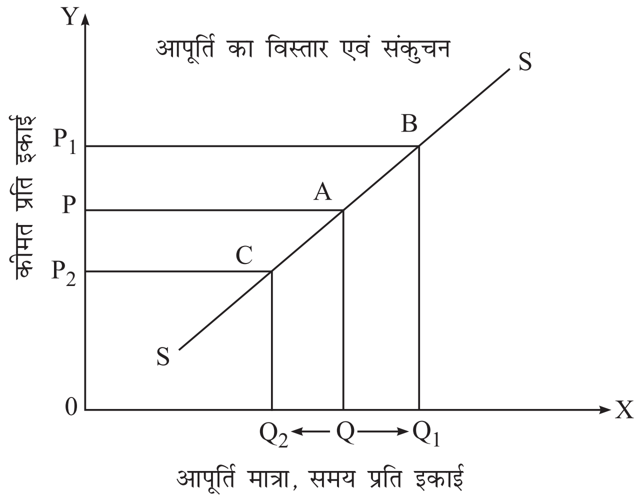

रेखाचित्र 19.2

उपरोक्त चित्र में प्रारंभिक कीमत और मात्रा क्रमशः OP तथा OQ है। जब कीमत OP से बढ़कर OP_1 हो जाती है, आपूर्ति की मात्रा भी बढ़कर OQ से OQ_1 हो जाती है। यह दर्शाता है कि संचलन उसी वक्र पर बिंदु A से B बिंदु की ओर ऊपर की तरफ होता है। आपूर्ति वक्र के नीचे बिंदु से ऊंचे बिंदु पर पहुंचना आपूर्ति का विस्तार कहा जाता है।

दूसरी तरफ जब कीमत OP से गिरकर OP2 होती है तो आपूर्ति की मात्रा भी घटकर OQ से OQ_2 हो जाती है। उसी आपूर्ति वक्र पर यह संचलन बिंदु A से बिंदु C नीचे की ओर होता है। इसलिए एक आपूर्ति वक्र के ऊंचे बिंदु से नीचे बिंदु पर पहुंचना आपूर्ति का संकुचन कहलाता है।

अतः कहा जा सकता है कि वस्तु की कीमत का परिवर्तन ही उस वस्तु की आपूर्ति मात्रा में परिवर्तन उत्पन्न करता है। मात्रा की वृद्धि आपूर्ति विस्तार और मात्रा की कमी आपूर्ति संकुचन कहा जाता है।

2. आपूर्ति निर्धारक अन्य घटक : वस्तु की कीमत के अतिरिक्त जब आपूर्ति निर्धारक अन्य घटकों में परिवर्तन आता है तो आपूर्ति की मात्रा या तो बढ़ जाएगी या घट जाएगी। प्रायः देखा गया है कि कुछ मामलों में वस्तु की कीमत स्थिर रहते हुए, उसकी आगतों की कीमत में परिवर्तन, उत्पादन तकनीक में परिवर्तन, अन्य संबंधित वस्तुओं का परिवर्तन अथवा सरकार की कराधान की नीति आदि में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण के लिए, माना किसी वस्तु की उत्पादन तकनीक में सुधार होने पर वस्तु की उत्पादन लागत प्रति इकाई में कमी आ जाती है। एक फर्म वस्तु की उस स्थिर कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा विक्रय करती है। अतः उसी कीमत पर दूसरी वस्तुओं की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है। आपूर्ति की वृद्धि यह प्रदर्शित करती है कि आपूर्ति वक्र में आगे की ओर खिसकाव हो रहा है।

दूसरी तरफ यदि कोई फर्म उत्पादन में घटिया किस्म की उत्पादन तकनीक का प्रयोग करता है तो प्रति इकाई उत्पादन लागत अधिक होगी। वह फर्म प्रचलित कीमत पर वस्तु की कम

मात्रा बेचने को तैयार होगा। अतः स्थिर कीमत पर वस्तु की आपूर्ति कम हो जाएगी। इस स्थिति में आपूर्ति वक्र का पीछे की ओर खिसकना कहलाता है। अर्थात् आपूर्ति की कमी प्रदर्शित करता है।

निम्न रेखाचित्र द्वारा आपूर्ति वृद्धि तथा कमी को दिखाया जा सकता है।

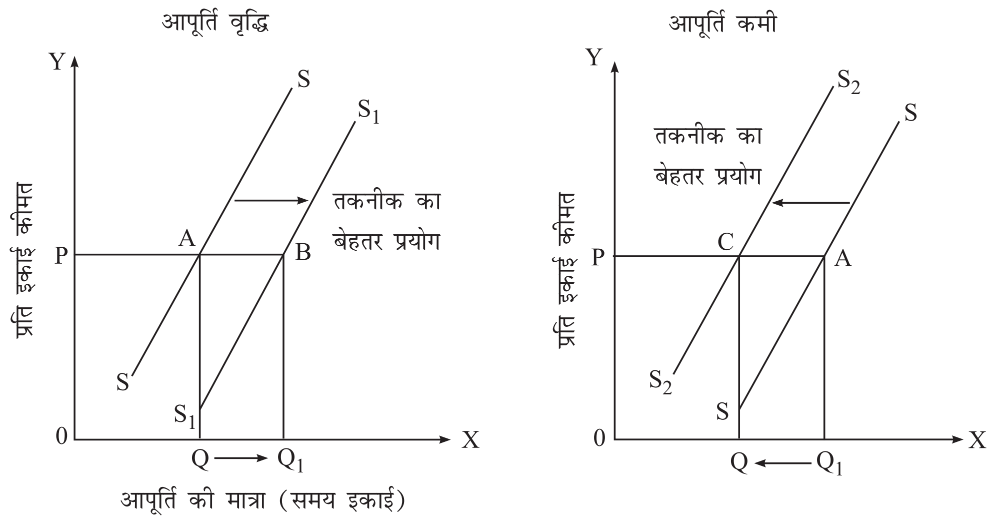

रेखाचित्र 19.3

19.5.1 आपूर्ति में वृद्धि लाने वाले कारक अथवा आपूर्ति वक्र का दायीं तरफ खिसकना

1. अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत में गिरावट।
2. आगतों/ घटकों की कीमत में गिरावट।
3. उत्पादन में बेहतर तकनीक का प्रयोग।
4. सरकार द्वारा आवकारी कर का घटाना।
5. अधिकतम बिक्री पर अधिकतम लाभ का उत्पादक के उद्देश्य का होना।

19.5.2 आपूर्ति में कमी लाने वाले कारक अथवा आपूर्ति वक्र का पीछे की ओर खिसकाव

1. संबंधित वस्तुओं की कीमत में वृद्धि
2. आगतों/ घटकों की कीमत में वृद्धि
3. उत्पादन में घटिया तकनीक का प्रयोग
4. सरकार द्वारा आवकारी कर में वृद्धि
5. उत्पादक के उद्देश्य (अधिकतम लाभ) में परिवर्तन।

पाठगत प्रश्न 19.4

1. वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से यदि कोई वस्तु की आपूर्ति मात्रा में कमी आती है तो आपूर्ति की गिरावट को क्या कहेंगे?
2. तकनीकी प्रगति होने से यदि किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होती है तो आपूर्ति की इस वृद्धि को क्या कहेंगे
3. किसी वस्तु की आपूर्ति बढ़ाने वाले कोई तीन कारकों का उल्लेख कीजिए।
4. वस्तु की मात्रा में कमी कराने वाले तीन कारकों का विवेचन कीजिए।
5. आपूर्ति वक्र के आगे की ओर खिसकाने वाले किन्हीं तीन तथ्यों पर प्रकाश डालिए।
6. आपूर्ति वक्र के पीछे की ओर खिसकाने के तीन कारक बताइए?
7. आपूर्ति के विस्तार और आपूर्ति वृद्धि में अंतर स्पष्ट करो।
8. आपूर्ति की कमी और संकुचन का भेद बताइए।
9. आपूर्ति वक्र पर चलन और आपूर्ति खिसकाव का अंतर स्पष्ट करो।
10. आपूर्ति में परिवर्तन और आपूर्ति की मात्रा में परिवर्तन का अंतर स्पष्ट करो।

आपने क्या सीखा

- वस्तु की आपूर्ति वस्तु की मात्रा की ओर इंगित करती है, जिसे एक विक्रेता निश्चित समयावधि पर निश्चित कीमत पर बिक्री करता है।
- वस्तु की आपूर्ति प्रभावित होती है–1. वस्तु की कीमत, 2. अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, 3. आगतों/ घटकों की कीमत, 4. उत्पादन की तकनीक, 5. सरकार की कर निर्धारण नीति, 6. फर्म के उद्देश्य पर।
- जब आपूर्ति की मात्रा और आपूर्ति निर्धारकों के संबंध को गणितीय समीकरण पर मापते हैं तो वह आपूर्ति फलन कहलाता है।
- आपूर्ति का नियम बताता है, यदि अन्य बातें स्थिर रहें, वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होता है।
- आपूर्ति अनुसूची, विभिन्न कीमतों पर वस्तु की विभिन्न आपूर्ति की मात्रा को दर्शाती है।
- आपूर्ति वक्र, आपूर्ति अनुसूची का आरेखीय प्रदर्शन होता है।

- सभी व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूचियों को जोड़कर बाजार आपूर्ति अनुसूची का पता लगाया जाता है।
- सभी व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र का समस्तरीय जोड़ बाजार आपूर्ति वक्र कहलाता है।
- वस्तु की कीमत परिवर्तन से वस्तु आपूर्ति की मात्रा का परिवर्तन ज्ञात होता है।
- आपूर्ति वक्र पर आपूर्ति की वृद्धि का आगे की ओर चलन होता है, जबकि आपूर्ति की कमी का आपूर्ति वक्र पर चलन पीछे की तरफ होता है।
- एक ही आपूर्ति वक्र पर आपूर्ति का विस्तार आगे की ओर ऊपरी दिशा में और आपूर्ति संकुचन नीचे की ओर पीछे हटता है।

पाठांत अभ्यास

1. आपूर्ति का क्या अभिप्राय है?
2. संक्षेप में आपूर्ति के निर्धारकों को समझाइए।
3. आपूर्ति फलन की परिभाषा दीजिए।
4. आपूर्ति नियम की व्याख्या कीजिए, इस नियम के पीछे मुख्य मान्यताएं कौन-सी हैं।
5. आपूर्ति अनुसूची और आपूर्ति वक्र का अंतर बताइए।
6. आपूर्ति (व्यक्तिगत) वक्र से बाजार आपूर्ति वक्र कैसे खींचा जाता है?
7. आपूर्ति वृद्धि वक्र को समझाइए।
8. प्रचलित कीमत पर किन संभावनाओं में एक विक्रेता वस्तु की कम मात्रा बेचने को तैयार होता है।
9. आपूर्ति वक्र का आगे की ओर खिसकाव तथा वक्र का पीछे की ओर खिसकाव का अंतर बताइए।
10. आपूर्ति में कमी और आपूर्ति के संकुचन में भेद बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. खंड 19.1 को पढ़िए।
2. खंड 19.1 को पढ़िए।

3. खंड 19.2 को पढ़िए।
4. खंड 19.2 (iii) को पढ़िए।
5. खंड 19.2 (iii) को पढ़िए।
6. खंड 19.2 (ii) को पढ़िए।

19.2

1. कीमत = 3
2. कीमत = 8
3. कीमत = 28

19.3

1. खंड 19.4 को पढ़िए।
2. खंड 19.4.2 को पढ़िए।
3. खंड 19.4.3 को पढ़िए।
4. खंड 19.4.3 (ii) को पढ़िए।
5. खंड 19.4.4 को पढ़िए।
6. खंड 19.4.4 (ii) को पढ़िए।
7. खंड 19.4 को पढ़िए।

19.4

1. खंड 19.5 (i) को पढ़िए।
2. खंड 19.5 (ii) को पढ़िए।
3. खंड 19.5.1 को पढ़िए।
4. खंड 19.5.2 को पढ़िए।
5. खंड 19.5.1 को पढ़िए।
6. खंड 19.5.2 को पढ़िए।
7. खंड 19.5 (i) तथा 19.5 (ii) को पढ़िए।
8. खंड 19.5 (i) तथा 19.5 (ii) को पढ़िए।
9. खंड 19.5 (i) तथा 19.5 (ii) को पढ़िए।
10. खंड 19.5 (i) तथा 19.5 (ii) को पढ़िए।